National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040
Impact Factor: RJIF 5.22
www.nationaljournals.com
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 607-609

जवाहर लाल नेहरू के राजनैतिक तथा समाजिक विचारः राष्ट्रवाद एंव अंतर्राष्ट्रीय वाद

डॉ0 आशुतोष सिंह
असिस्टेन्ट प्रोफेसर (राजनीतिशास्त्र विभाग), रामप्रसाद सिंह पी0जी0 कालेज सिसवां महराजगंज, आजमगढ़, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

जवाहर लाल नेहरू सामाजिक समनता के कट्टर परिपोषक थे। वे भारतीय समाज मे व्याप्त जातिगत संकीर्णताओ के विरोधी थे और उनको समूल विनष्ट कर देना चाहते थे। वे वैज्ञानिक दृष्टि वाले व्यक्ति थे और उनकी इतिहास दृष्टि अत्यन्त प्रखर थी।उनको यह अच्छी तरह से ज्ञात था कि इन संकीर्णताओ के पीछे, वे सामजिक और आर्थिक व्यवस्थाये है जो आधुनिक विश्व के सन्दर्भ मे निरर्थक हो चुकी की है। वे वर्ण व्यवस्था के भी विरोधी थे और धर्म पर आधारित आस्थाओं पर सीधे चोट करते थे।

नेहरू के विचारो पर वैज्ञानिक एंव प्राविधिक क्रान्ति, मानवता वाद, धर्म निरपेक्षता, उदारवाद, फेबियनवाद तथा मार्क्सवाद का स्पष्ट प्रभाव था। वे आर्थिक नियोजन एंव लोकतंत्रवाद दोनो के मध्य समन्वय स्थपित करना चाहते थे। आलोचको ने उन्हे शायद इसी कारण 'हेमलेट ऑफ इण्डिया' कह कर सम्बोधित किया है किन्तु यह सत्य है कि लोकतंत्र को यथावत बनाये रखना तथा आर्थिक नियोजन के रूसी उदाहरण का भारतीयकरण करने मे नेहरू ने जो वैचारिक एंव व्यवहारिक सफलता प्राप्त की वह विश्व मे अनूठी थी।[1]

समस्त जातिगत, सम्प्रदायगत और धर्म पर आधरित संकीर्णताओं के ऊपर उठकर वे एक ऐसे राष्ट्र का निर्माण करना चाहते थे जो अपने अन्तर्राष्ट्रीयता की भूमिका समुचित रूप से निभा सके। उनकी समस्त राजनैतिक परिकल्पनाये इसी भावना पर निर्भर है उनका समाजवादी दृष्टिकोण, गुटनिरपेक्षता का सिद्धान्त आर्थिक व्यवस्था की संरचना ये सभी राजनैतिक सिद्धान्त समानता और अन्तर्राष्ट्रीयता के आधार पर निर्भर है।

नेहरू जी गाँधी जी की तरह अराजकता वादी विचारक नहीं थे, वे राज्य की सत्ता को अनिवार्य आवश्यकता मानते थे क्योकि वे अहिंसा के गाँधीवादी सिद्धान्त को अव्यवहारिक मानते थे उनकी मान्यता थी कि राष्ट्र को सही मार्ग पर अग्रसर कराने के लिए एक राज्य एक सरकार, एक शासन की आवश्यकता होती है। स्वतन्त्रता का दुरूपयोग करने की आजादी नही दी जा सकती। सरकार अवश्य हो और वह जनमत के अनुसार कार्य करे।

इसी विचार धारा के आधार पर नेहरू का लोकतंत्र सम्बन्धी सिद्धान्त आधरित है वे अक्सर कहा करते थे कि लोकतंत्र मे बुराई हो सकती है, किन्तु इससे अधिक अच्छी राजनैतिक व्यवस्था हो ही नही सकती। नागरिको को अपनी मर्जी के अनुसार सरकार चुनने की आजादी होनी चाहिए और इसके लिए सबसे अच्छी व्यवस्था है संसदीय लोकतंत्र जिसमे हर व्यक्ति को अपना प्रतिनिधि चुनने के आजादी होती है, और वह अपनी व्यक्तिगत सत्ता को महसूस करता है। नेहरू व्यक्तिगत स्वतन्त्रता को अत्यन्त महत्व पूर्ण मानते थे, वे बराबर कहते थे कि व्यक्ति की सत्ता को राज्य के हित मे दांव पर नहीं लगाया जा सकता। वे यह भी महसूस करते थे कि जब तक आर्थिक समानता नही आयेगी व्यक्तिगत 'वोट' का कोई महत्व नही है। लोकतांन्त्रिक व्यवस्था को साध्य नही साधन ही माना जा सकता है। जिस लोकतंत्र मे भूख और दरिद्रता हो वह लोकतंत्र वास्तव मे लोकतंत्र नहीं है। इसके लिए उन्होने एक समाजवादी दृष्टिकोण की आवश्यकता महसूस की।

उनकी मान्यता थी कि लोकतंत्र मात्र एक राजनैतिक व्यवस्था नहीं है बल्कि एक जीवन पद्धति है, एक ऐसा नजरिया जो व्यक्ति को अपनी गरिमा का अहसास करवाता है। वोट देने मात्र से या चुनाव करवा देने मात्र से इस जीवन पद्धति का केवल परोक्ष सम्बद्ध है। परोक्ष इस लिए कि बिना इसके इस पद्धति का पोषण हो ही नही सकता किन्तु असल बात उस नजरिये की है, जिसके बिना हम एक मशीनी लोकतंत्र की लाश खीचते रह जायेगे। हमको यह महसूस करना होगा कि हम एक बहुत बडे अन्तर्राष्ट्रीय तंत्र के हिस्से मात्र है किन्तु हमारी भूमिका अत्यन्त महत्व पूर्ण है। एक ओर हमे राष्ट्रीय हित का ध्यान रखना है तो दूसरी और अन्तर्राष्ट्रीय शन्ति की दिशा मे अग्रसर होना है। इस लिए लोकतंत्र को केवल एक निर्जीव तंत्र के रूप मे नही लिया जा सकता। इसका उपयोग उन मूल्यो की उपलब्धि के लिए करना पडेगा जिनसे हमारे अस्तित्व की गरिमा बनी है। हम भारतीय तो है ही, किन्तुं हम विश्व नागरिक भी हैं।[2]

नेहरू के राजनीतिक चिन्तन मे उनकी संविधानवाद मे दृढ निष्ठा प्रगट होती है वे सार्व भौमिक वयस्क मताधिकार के माध्यम से लोकतान्त्रिक पद्धति के क्रान्तिकारी कार्य को सम्पादित करना चाहते थे। दीर्घ काल से चले आ रहे विदेशी शासन के पश्चात भारत की महत्वपूर्ण समस्या राजनीतिक एवं आर्थिक स्थायित्व प्राप्त करने की थी नेहरू ने दोनों लक्ष्यों की पूर्ति करने का साहस प्रदर्शित किया। राजनीतिक स्थायित्व के लिए संसदात्मक शासन पद्धति का सहारा लिया तथा आर्थिक स्थायित्व का प्राप्त करने के लिए नेहरू ने सम्पत्ति के अधिकार को छीनने के स्थान पर जनता को पूंजी के केन्द्रीयकरण से उत्पन्न परेशनियों से अवगत कराया और सहकारिता आन्दोलन के माध्यम से कुटीर एंव लघु उद्योगों की स्थापना तथा सम्पत्ति के उचित वितरण पर अपना ध्यान केन्द्रित किया।[3]

उनके लोकतंत्र सम्बन्धी विचारों का दूसरा महत्वपूर्ण आयाम उनकी 'सामजवादी' विचारधारा है। उनका दृढ विश्वास था कि भारत की ही नही वरन् समस्त विश्व की समस्याओं का एक मात्र हल समाजवादी–व्यवस्था से ही हो सकता है वे इस विचार से सहमत नहीं थे कि लोकतंत्र और समाजवाद एक साथ नहीं पनप सकते। जब तक धन सम्पत्ति का समुचित बटवारा नही होगा समानता का सिद्धान्त निरर्थक होगा समानता का सिद्धान्त निरर्थक होगा और बिना न्यायपूर्ण बँटवारे के आर्थिक समस्याओं का लोकतांन्त्रिक हल नही निकल सकेगा। नेहरू की समाजवादी विचारधारा के तीन मुख्य स्रोत थे–[4]

1. उनकी भारतीय इतिहास की समझ
2. ब्रिटेन का फैबियन सोशलिज्म

3. मार्क्स वादी–विचार धारा का प्रभाव तथा उसका रूसी प्रयोग

इनके माध्यम से उन्होनें एक नयी पद्धति की शुरूआत की और उसकी व्याख्या को तर्क संगत बनाने का प्रयत्न किया। नेहरू ने अपनी पुस्तको'डिस्कवरी आफ इण्डिया', ग्लिम्पसेज 'आफ वर्ल्ड हिस्ट्री', 'मेरी आत्मकथा' तथा कई लेखो और भाषणो मे इतिहास सम्बन्धी विचारो की विशद् व्याख्या की है। उन्होनें महसूस किया कि भारत के पस एक महान सांस्कृतिक विरासत है किन्तु इसके बावजूद भी वह उन्नति के मार्ग पर चलने मे असमर्थ रहा। इसका एक मुख्य कारण उन्होनें यह बताया कि भारत मे धर्मान्धता तथा दकिया नूसीपन की वजह से कई समाजिक कुरीतियों का प्रचलन हो गया है जीवन दायिनी परंपरा का विनाश और रूढ़िवादी कुरितियो का प्रचार बराबर होता रहा है। सामन्तवाद, जमींदारी प्रथा तथा धार्मिक स्वार्थो की वजह से भारत उन्नति के मार्ग पर नहीं चल सका है इसके लिए यह आवश्यक है कि एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण की स्थापना की जाय और भारत के लोगों को यह समझाया जाय कि जब तक आधुनिक विश्व की नयी चेतना से लाभ नहीं उठाया जायेगा तब तक सही अर्थ मे समानता नही लायी जा सकेगी। वे गाँधी जी के इस विचार से सहमत नहीं थे कि भारत को पश्चिमी सभ्यता की आवश्यक्ता नहीं है। वे अन्तर्राष्ट्रीयवाद के इतने बडे कायल थे कि वे भारत की कल्पना बिना अन्तर्राष्ट्रीयवाद के कर ही नही सकते थे। वे कहते थे कि विज्ञान ने जो परिवर्तन किये है उनकी वजह से भारत अब अकेले नहीं जी सकता। इस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीयता के मार्ग पर अग्रसर होने के लिए एक मात्र उपाय यही है कि हम अपने अतीत के इतिहास से सबक सीखे, जब हम इस दिश की ओर अग्रसर होते है तो हमे केवल समाजवाद का मार्ग दिखाई पड़ता है– एक ऐसा समाजवाद जो आर्थिक समृद्धि भी लाये और लोकतंत्र के सिद्धन्त के प्रतिकूल भी न हो।

19 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध मे नेहरूजी 'फेवियन सोशलिज्म' के सम्पर्क मे आये और उसका गहन अध्ययन किया। इसकी नींव ब्रिटेन ने सिडनी वैव, ग्राहम वैलास,बर्नाड शा आदि बुद्धि जीवियो ने डाली। नेहरू जी को फेबियन सोशलिज्म की अहिंसा न करने की भावना अधिक प्रेरणा दी जिसको उन्होने गाँधी जी के अहिंसा से सिद्धान्त से जोड़ दिया और अपने समाजवादी सिद्धन्तों में इसका समावेश किया।[5] इसके अतिरिक्त नेहरू के उपर मार्क्सवादी विचारधारा तथा रूस की यात्रा के दौरान लेनिन के विचारों का प्रभाव पड़ा। परन्तु वर्ग संघर्ष की भावना से भयभीत थे और वे इसके कुप्रभाव से बचाना चाहते थे। इसके अतरिक्त साम्यवादी दृष्टिकोण मे व्यक्ति को पूर्णतया नकार दिया गया था। 'राज्य सब कुछ है व्यक्ति कुछ नहीं इस भावना को नेहरू अगीकार नही कर सकते थे, वे लोकतान्त्रिक पद्धति के प्रबल समर्थन थे और लोकतंत्र की आधार शिला 'व्यक्ति' है 'समाज' नहीं। नेहरू को भारतीय समाजवाद का सिद्धान्त प्रतिपादित करना था, वे जन साधारण की अशिक्षा और दरिद्रता से परिचित थे। इसके अलावा वे गाँधीवाद की सर्वग्राहयता की भी वह अनदेखी नहीं कर सकते थे। लोकतंत्र का रास्ता व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का रास्ता भी है और आर्थिक समानता का भी। राज्य अपनी तरह से समृद्ध हो और व्यक्ति अपनी योग्यतानुसार समृद्धि के मार्ग पर चले यही लोकतान्त्रिक समाजवाद है। इसी अवधारणा से भारत की वर्तमान अर्थव्यवस्था की संरचना की गयी है। हमारी अर्थव्यवस्था मिश्रित अर्थ व्यवस्था है जिसमे राष्ट्रीयता के सिद्धान्त को मान्यता दी गयी है और उसी के साथ वैयक्तिक उद्योग को भी पनपने का अवसर दिया गया है।

नेहरू जी ने विश्व राजनीति के धुवीकरण का विरोध किया और वे भारत को किसी शक्ति गुट मे सम्मिलित करने के लिए कभी तैयार नहीं हुए। शीत युद्ध के दौर में उन्होनें तीसरी दुनिया के देशो को गुट निरपेक्षता की जो राह दिखई उस पर चल कर उन देशो ने उपनिवेशवाद की समाप्ति, अन्तर्राष्ट्रीय अन्याय के उन्मूलन और विश्व शन्ति की रक्षा मे उल्लेखनीय योगदान किया। गुटनिरपेक्षता की नीति भारत की ऐतिहासिक परम्पराओं पर आधरित थी। महात्मा वुद्ध और गाँधी के इस देश में विश्व को सदैव शांति और अहिंसा का संदेश दिया है।[6]

गुटनिरपेक्षता, तटस्थता या एकाकी आस्तित्व नहीं है यह एक निष्क्रिय सिद्धान्त न होकर एक गतिशील भावना है। हम ना तो पूँजीवादी गुट के चगुल मे फसेंगे और न ही साम्यवाद की चपेट मे आयेगे हम हर राष्ट्र के मित्र है और एक विकासशील देने होने के नाते हमारा यह प्रयत्न रहेगा कि हम दोनो गुटों से सहायता प्राप्त करे यदि वह बिना किसी शर्त के हो। गुट निरपेक्षता के पीछे दो महत्वपूर्ण ध्येय थे– पहला विश्व शन्ति और दूसरा राष्ट्रीय हित।

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में नैतिकता की प्रतिष्ठा नेहरू जी ने पंचशील के सिद्धान्त का निरूपण किया। पंचशील का अर्थ है पाँच प्रतिज्ञाये या पाँच व्रत है यह बौद्ध साहित्य से लिया गया शब्द है ।

नेहरू जी ने 1954 मे भारत–चीन समझौते के अर्न्तगत अन्तर्राष्ट्रीय नैतिकता के जिन पॉच सिद्धान्तो का विवरण दिया उन्हे भी पंचशील की संज्ञा दी गयी। ये सिद्धान्त थे–

1. एक दूसरो की प्रादेशिक अंखडता और प्रभुसत्ता का परस्पर सम्मान।
2. परस्पर अनाक्रमण।
3. एक दूसरे के आन्तरिक मामलो मे अहस्तक्षेप।
4. समानता और परस्पर लाभ ।
5. शांति पूर्ण सह– अस्तित्व तथा आर्थिक सहयोग।

इस सिद्धान्तो का ध्येय परस्पर सुरक्षा, आस्था और विश्वास की भावना को बढावा देना था।[7]

इस प्रकार से हम देखते है कि नेहरू जी ने गाँधी के विचारो पर आधारित विश्व– शंति की एक योजना को जन्म दिया। इसी योजना के आधार पर स्वतन्त्रता के कुछ ही अरसे के बाद भारत को दुनियॉ के देशे के बीच एक ऐसा स्थान मिला जिसकी उम्मीद 1947 मे नहीं की जा सकती थी। आज विश्वराजनीति मे भारत का जो स्थान है उसके पीछे नेहरू जी की विचार धराओ की महत्वपूर्ण भूमिका है।

नेहरू जी ने सदियो चले आ रहे सम्प्रदायिक वैमनस्य के विवाद में पड़े भारत को धर्म निरपेक्षता का सन्देश दिया और भारत का विश्व के अग्रणी–धर्म निरपेक्ष राज्यो की पंक्ति में खड़ा होने का गौरव प्रदान किया। भारत के आध्यात्मिक एंव नैतिक मूल्यों का अनुसरण करते हुए भारत मे लोक कल्याणकारी राज्य की स्थापना की गयी। समाजिक सुरक्षा तथा सामाजिक समानता का लक्ष्य प्राप्त करने हेतु नेहरू ने ऊँच–नीच, जाति–पॉति तथा छुआ–छूत के विरूद्ध व्यापक अभियान चलाया। नेहरू जी ने मानव में ईश्वरोचित गुणों का दर्शन किया है। वे पाश्चात्य जीवन के चकाचौध पैदा करने वाले कृत्रिम प्रभावो से दूर रहकर पूँजीवाद, उपनिवेशवाद, साम्यवाद आदि वे मुक्ति मार्ग दर्शाते हुए अन्तर्राष्ट्रीय वाद तथा विश्व सरकार की स्थापना का मार्ग प्रशस्त किया है। उनके उदात्त जीवन पक्ष ने उन्हें भारतीय जनता का हृदय–सम्राट बना दिया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डा0पुरूषोत्तम दास नागर,'आधुनिक भारतीय समाजिक एंव राजनीतिक चिन्तन, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर,

पृष्ठ –490
2. डा0एम0 जी0 जोशी गाँधी,नेहरू टैगारे और अम्बेडकर, अभिवयक्ति प्रकाशन बी 31 गोविनपुर कलोनी इलाहाबाद पृ0 61
3. डा0पुरूषोत्तम दास नागर,'आधुनिक भारतीय समाजिक एंव राजनीतिक चिन्तन,राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर, पृष्ठ –491–492
4. डा0एम0 जी0 जोशी गाँधी,नेहरू टैगारे और अम्बेडकर, अभिवयक्ति प्रकाशन बी 31 गोविनपुर कलोनी इलाहाबाद पृ0 61–62
5. उपरोक्त, पृ0 62–63
6. ओम प्रकाश गावा, राजनीतिक चिंतन की रूपरेखा मयूर पेपर बैक्स,ए–95 सेक्टर 5 नोएडा 201301,पृष्ठ,336
7. उपरोक्त, पृष्ट 336